International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2021, Submitted in August 2021, iajesm2014@gmail.com

प्राचीन भारतीय इतिहास में शिक्षा पद्धति

Dr. Pradeep Kumar Kesharwani, Department of History, Kalinga University, Raipur (CG)
Kamal Rana, Research Scholar, Department of History Kalinga University, Raipur (CG)

सारांश

ऋग्वैदिक एवं उत्तरवैदिक काल में साहित्य लेखन में जो प्रगति हुई, उससे बुद्ध से पूर्व ही शिक्षा का उच्च स्तर का ज्ञान था। ब्राह्मण वर्ण का उद्देश्य सब लोगों को ज्ञान प्राप्त करने का अवसर देना था। गुरुकुल प्राचीन भारत में शुरू हुए शैक्षणिक संस्थान थे, जिन्होंने पूरे समाज में ज्ञान का प्रसार किया था। ये संस्थान, जिनका नेतृत्व अक्सर ब्राह्मण शिक्षक करते थे, अपने कठोर पाठ्यक्रम और नैतिक मूल्यों पर जोर देने के लिए जाना जाता था। पुराने बौद्ध ग्रंथों के संग्रह पाली गांधों में भी ब्राह्मण आचार्यों के नेतृत्व में गुरुकुलों का उल्लेख है। ये नेता समाज में बहुत सम्मानित थे, जिन्हें दिशा प्रमुख आचार्य कहा जाता था। प्रमुख गुरुओं का समाज में सम्मानित स्थान था, जिसमें सैकड़ों शिष्य थे। चम्पा में एक दिशा-निर्देशक आचार्य का बहुत नाम था।
नगरों के आसपास भी कई गुरूकुल बनाए गए थे। वास्तव में, पारंपरिक गुरुकुल शहरी जीवन की व्यस्तता से दूर थे। इस अलगाव ने आध्यात्मिक विकास और सीखने के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाया। ऐसा माना जाता था कि प्रकृति में खुद को विसर्जित करने से शांति और ध्यान बढ़ता है, जिससे विद्यार्थी अपने शिक्षकों की शिक्षा को पूरी तरह से समझ सकते हैं। राजधानियाँ और व्यापारिक केंद्र भी स्वभावतः शिक्षा के स्थानों थे, जहाँ वरिष्ठ शिक्षक रहते थे। बहुत से विद्यार्थी यहाँ शिक्षार्थ आए। प्राचीन भारत में गुरुकुल शिक्षा के केंद्र थे, अक्सर गुरु के निवास से जुड़े हुए थे। (जामबीमत)। विद्यार्थी अपने शिक्षक के साथ रहते थे और उनके दैनिक जीवन और शिक्षाओं से सीखते थे।

परिचय

वाराणसी और तक्षशिला महान शिक्षण स्थान थे, लेकिन वे अपने आप में गुरुकुल नहीं थे। वे बड़े संस्थान थे, शायद उनकी संरचना में गुरुकुल भी शामिल थे। इन विश्वविद्यालयों ने देश भर और बाहर से विद्यार्थियों को अपनी विशिष्ट शिक्षा के लिए आकर्षित किया। बौद्ध मठों का उदय, ब्राह्मणों के पारंपरिक गुरुकुलों के साथ-साथ शिक्षा केंद्रों के रूप में भी। इस बदलाव का श्रेय निम्नलिखित घटकों को दिया जा सकता है: मठों की स्थापना बौद्ध भिक्षुओं के आदेश से मठवासी जीवन शैली में शिक्षण पर जोर, एक भिक्षु के जीवन के विभिन्न चरणों को समन्वित करने से आसान होता है। इन मठों में शिक्षण सुविधाओं की व्यापक उपलब्धता है।

तर्क:

प्रसिद्ध शिक्षक: कौटिल्य और पाणिनी जैसे प्रसिद्ध विद्वानों ने विद्यार्थियों को तक्षशिला की ओर आकर्षित किया। अलग-अलग कक्षाओं का आकार: अलग-अलग शिक्षकों में संभवतः छात्रों की संख्या अलग-अलग थी, जिनमें से कुछ जाटकों में उल्लिखित 500 जैसे बड़े समूहों को संभालते थे। यह तक्षशिला के बारे में एक रोचक जानकारी है! राजकुमारों को अपना घर रखने का अधिकार था, हालांकि कुछ विद्यार्थी गुरुकुल में ही रहते थे। यह शिक्षा प्रणाली राजघराने और आम लोगों दोनों को समान शिक्षा देती थी। पुरानी भारतीय शिक्षा व्यवस्थाओं के कुछ रोचक पहलुओं पर प्रकाश डालता है:
गुरुकुल: ये संस्थान आवासीय शिक्षा देते थे, जिसमें छात्र अपने शिक्षकों के साथ रहते थे और कम खर्च के बदले घर या खेत में काम करते थे।
तक्षशिलाः हालांकि उच्च जाति की अधिकता थी, इस विश्वविद्यालय ने विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों को आकर्षित किया। रात का कमराः गुरुकुलों ने दिन में काम करने वाले विद्यार्थियों को भी सीखने की सुविधा दी।

शिक्षण काल:

16-17 वर्ष की आयु में प्राचीन भारत में बुद्धकालीन समाज में शिक्षा प्रणाली चार चरणों में विभाजित थी: ब्रह्मचर्य (छात्र), गृहस्थ (गृहस्थ), वनवासी (वनवासी) और संन्यास। तमदनदबपंजम। गुरुकुल (आवासीय विद्यालय) में पढ़ाई पूरी करने के बाद, छात्र अक्सर ब्रह्मचर्य चरण में प्रवेश करते थे, जहाँ उनका ध्यान विवाह, परिवार की देखभाल और अपने सामाजिक कर्तव्यों को पूरा करने पर था।
विशेष प्रशिक्षण या शिक्षा चाहने वाले व्यक्ति अपने ज्ञान स्तर को बढ़ाने या किसी अन्य शिक्षक या संस्थान के तहत शिक्षा प्राप्त करने का विकल्प चुन सकते हैं। यह मार्ग गृहस्थ चरण में संक्रमण के रूप में आम नहीं था, लेकिन गहरी बौद्धिक खोज चाहने वालों के लिए उपलब्ध था। वे शिक्षक किसी महत्वपूर्ण शिक्षण केंद्र में प्रवेश करते थे। धर्मसूत्रों और स्मृति ग्रंथों के अनुसार, उपनयण की आयु और वैदिक अध्ययन की शुरुआत को चिह्नित करने वाला एक समारोह, निश्चित रूप से तक्षशिला उच्च शिक्षा का केंद्र था। ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों की सबसे कम आयु आठ से बारह वर्ष थी, और सबसे अधिक आयु सोलह से चौबीस वर्ष थी। जातक में उपनयन की एक निश्चित आयु का उल्लेख नहीं है, लेकिन यह बताता है कि राजकुमारों को सोलह वर्ष की उम्र तक पढ़ाया गया था। इसके बावजूद, इसमें संदेह है क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी को सोलह वर्ष की आयु में पूरे शास्त्र को जानना असंभव है। धर्मशास्त्रों में ब्राह्मण होने की आयु 7 और 16 वर्ष बताई गई है। 16-17 वर्ष की आयु से पहले, उच्च शिक्षा का लक्ष्य

रखने वाले विद्यार्थियों ने अपनी पढ़ाई जारी रखी, जब अधिकांश विद्यार्थियों ने अपनी शिक्षा पूरी की और घरेलू जीवन में प्रवेश किया। परिच्छेद में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विशिष्ट व्यक्तियों का उल्लेख नहीं किया गया

शिक्षण विषय:

यूनिकोड प्राचीन भारतीय शिक्षा में विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल थी, जिसने बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास की नींव रखी। यहाँ पढ़ने वाले कुछ महत्वपूर्ण विषयों का एक संक्षिप्त विवरण है:

वेद: वेद, हिंदू धर्म की मूल नींव, सबसे पुराना ग्रंथ है जिसमें स्पष्ट ज्ञान है। वेदों को समझने और उनकी व्याख्या करने में मदद करने वाले छह सहायक विषय वैदिक साहित्य (शवेदांग) में हैं। इनमें छंद, कल्पना (अनुष्ठान), व्याकरण (व्याकरण), निरुक्त (व्युत्पत्ति), ज्योतिष (खगोल विज्ञान) और शिक्षा (ध्वन्यात्मक)। (उमजम)।

ब्राह्मण संहिता और उपनिषद: ये ग्रंथ दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों पर चर्चा करते हैं, आत्मा, वास्तविकता की प्रकृति और मानव अस्तित्व का अंतिम उद्देश्य बताते हैं।

गृह्य सूत्र और धर्म सूत्र: ये जीवन के सामाजिक और कानूनी पहलुओं से संबंधित हैं, जो जीवन के विभिन्न अवसरों और चरणों के लिए नियम और अनुष्ठान निर्धारित करते हैं। धर्मविधियों का पद्यमय वर्णन करने वाले साहित्य को कारिका कहा जाता था। वैदिक अनुक्रमण भी बनाया गया था। 6. लौकिक लेखन: अर्थशास्त्र, कला और चर्चा पाणिनी ने धार्मिक तथा लौकिक विषयों के समृद्ध साहित्य का उल्लेख किया है, जिससे तत्कालीन पाठ्य विषयों का ज्ञान मिलता है। वे तर्क-विर्तकों को पराजित करने के लिए विरोधी विचारों को भी सीखते हैं। यही कारण है कि बौद्ध और ब्राह्मण लोग एक दूसरे के साहित्यिक ज्ञान से पूरी तरह परिचित थे, क्योंकि इसके बिना बौद्ध और ब्राह्मण लोगों की संस्थाओं में पढ़ाया जाने वाला विचार गलत धारणा है। इस व्यापक प्रचलन की पुष्टि करने के लिए कम प्रमाण हैं।

इन विचारों के बीच संबंधों की अधिक स्पष्ट व्याख्या निम्नलिखित है:

बहस और भाषण: ब्राह्मण और बौद्ध दार्शनिक बहस में शामिल हो सकते हैं, लेकिन बहस हारने से शैक्षणिक संस्थानों में ज्ञान का हस्तांतरण हुआ नहीं है। मुक्त प्रणालियाँ: बौद्ध धर्म और ब्राह्मणवाद दोनों ने अपनी मजबूत दार्शनिक प्रणालियों को अपनी परंपराओं के भीतर प्रसारित करना पसंद किया था। चुल्लवग्ग में भिक्षुओं को भी कपड़े चुनने के उपकरणों का उपयोग करते हुए बताया गया है। पालि ग्रंथों में अष्टादश शिल्पों का उल्लेख है, साथ ही इनकी श्रेणियों (निगमों) का भी। मिलिन्दपन्हों में उन्नीस शिल्पों का उल्लेख है, लेकिन पुराणों, दर्शनों और इतिहास के साथ-साथ चतुर्वेदों (चार वेदों) को भी अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित करना गलत लगता है। चतुर्वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) में अधिकांश भजन और अनुष्ठान हैं। दूसरी ओर, पुराणों में हिंदू पौराणिक कथाओं, इतिहास और ब्रह्मांड विज्ञान की बहुत सी पुस्तकें शामिल हैं। दर्शनशास्त्र में सांख्य, योग, वेदांत आदि भारतीय विचारधाराएँ शामिल हैं। बाद में, प्राचीन भारत में इतिहास अक्सर धार्मिक कहानियों और महाकाव्यों में लिखा गया था। यह संभव है कि आपने इन्हें सामान्य संदर्भ के लिए एक साथ समूहीकृत किया हो, लेकिन उन पर अधिक सटीक समझ के लिए अलग से विचार करना बेहतर है। जहां तक धनुर्वेद, रणवित, वैरक और मुचवित का संबंध है, ये चार वेदों या आम तौर पर ज्ञात उपवेदों में नहीं शामिल हैं। (नचचसमउमदजंतल टमकंे)। काशीका परंपरा या किसी कम ज्ञात ज्ञान प्रणाली में वे विशिष्ट हो सकते हैं। इनके अलावा पालि ग्रंथों में विधि, गणित, गणना, कृषि, पशुपालन, वाणिज्य और इस्सथ जैसे कई विषयों का उल्लेख है। इसलिए यह कहना गलत होगा कि तत्कालीन शिक्षा केन्द्रों में केवल कुछ विशिष्ट शिल्पों की शिक्षा दी जाती थी। मौर्य साम्राज्य (322–185 ईसा पूर्व) में शिल्प की गुणवत्ता और मात्रा में सुधार हुआ। उस समय, विभिन्न शिल्प और उद्योगों की देखरेख के लिए अधिकारियों की नियुक्ति के साथ शिल्प शिक्षा में एक संरचित दृष्टिकोण देखा गया। यह ध्यान तक्षशिला जैसे शिक्षण केंद्रों की मौजूदा प्रणालियों पर था, जो चिकित्सा और युद्ध सहित विभिन्न क्षेत्रों में विशेष शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे। व्यापार संघों ने भी विशिष्ट शिल्प के ज्ञान को प्रसारित किया। इस युग में सभी शिल्प श्रेणियाँ बन गईं और उन पर व्यापक अधिकार थे। अभ्यास के बिना शिल्प ज्ञान न तो पूरा होता है और न ही उपयोगी होता है। इसलिए विद्यार्थियों को कर्मशालाओं में काम करने का अवसर मिलता था। वस्तुत: साक्ष्यों से पता चलता है कि बुद्धकाल में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

अंगुत्तर निकाय : (सम्पादित), आर॰ मॉरिस तथा इ॰ हार्डी, पी॰टी॰ एस॰, लंदन, 1883–1900 (अनूदित) दी बुक ऑफ दी ग्रेजूअल सेविंग्स, भाग–एक अनूदित बुडवाई तथा हेयर, पालीटेट्स सोसायटी (पी॰टी॰ एस॰), लंदन 1994
आचारंग सूत्र : (अनूदित), ख्जोबी, जिल्द 22 (जैनसूत्र), ऑक्सफोर्ड, 1884
इतिवृत्तक : (सम्पादित), विडिश, ई॰, ऑक्सफोर्ड, 1978
उदान : (सम्पादित), महापंडित राहुल सांकृत्यायन, रंगून, 1937
कल्पसूत्र : (अनूदित) जकोबी, एस॰ बी॰ ई॰ जिल्द 22
खुद्दकपाठ : (सम्पादित), हेमर स्मिथ, पी॰टी॰एस॰, लंदन, 1915
जतक : (सम्पादित), फाउसबोल्ल टूबनर एण्ड कं॰ लि॰, लंदन, 1877–96
(अनूदित), कॉवेल्ल, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी 1895–1907
थेरगाथा : (सम्पादित), ओल्डेनबर्ग, पी॰टी॰एस॰ लंदन, 1773